© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

ब्रह्मवैवर्त पुराण में श्रीकृष्ण का स्वरूप

डॉ० रत्नेश कुमार

१/१०, तिलक नगर, अल्लापुर

इलाहाबाद

ब्रह्मवैवर्त की पुराण की विशेषता सूतनन्दन इस प्रकार बतायी है- यह पुराण, पुराणों, उपपुराणों एवं वेदों के क्रम का निराकरण करने वाला तथा समस्त पुराणों का सार है। इसमें श्री कृष्ण ने अपने सम्पूर्ण ब्रह्मभाव को प्रकट किया है। इसीलिए पुराण वेत्ता इसे ब्रह्मवैवर्तक कहते है ।

ब्रह्मवैवर्त शब्द का अर्थ है- ब्रह्मणो विवर्तः (परिणामः) ब्रह्मविवर्तः। ब्रह्म का आद्यविवर्त प्रकृति है। अतः 'ब्रह्मविवर्त शब्द का अर्थ प्रकृति होता है। प्रकृति के भिन्न-भिन्न परिणामों का जहाँ प्रतिपादन हो वह पुराण ग्रन्थ ब्रह्मवैवर्त है। प्रकृति के पाँच विवर्तो में पाचवाँ राधा है। राधा नाम प्राण शक्ति का है। प्राण शक्ति से ही यह विश्व राद्ध है। यह प्राण शक्ति राधा और परमेश्वर कृष्ण दोनों परस्पर में अनुस्यूत है। भगवान श्रीकृष्ण की राधा पर नामा यह प्राणशक्ति अनेक विवर्तो में विवर्तित होकर भगवान के संयोग, वियोग, आलिंगन आदि अवस्थाओं से विश्व में समस्त कार्यों की साधिका है। यह प्राणशक्ति राधा और प्राणेश्वर कृष्ण दोनों परस्पर में अनुस्यूत है। प्राणशक्ति की इस प्रक्रिया का वर्णन ग्रन्थकर्ता ने दार्शनिक परिभाषाओं से न करके कामशास्त्र में परिभाषित परिभाषाओं (संयोग, वियोग एवं आलिंगन) से किया है। इसी कारण यह पुराण भागवत और विष्णु पुराण से भिन्न हो जाता है।

ब्रह्मवैवर्त के चार खण्डों में से ब्रह्मखण्ड, प्रकृति खण्ड तथा कृष्णजन्मखण्ड में कृष्ण के स्वरूप की व्याख्या की गई है।

ब्र्रह्मखण्ड के प्रथम अध्याय में परमात्मा श्रीकृष्ण के महान उज्ज्वल तेजःपुञ्ज गोलोक में श्याम सुन्दर भगवान श्रीकृष्ण के परात्पर स्वरूप का निरूपण किया गया है। परम पवित्रमय, दिव्यातिदिव्य, चिन्मय, ब्रह्मरूप तेजो मंडल में परम प्रकाशमय पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण नित्य विद्यमान है।

सृष्टि के आरम्भ में इन्ही पुरूषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण के दक्षिण भाग से शंख, गदा, चक्र तथा शार्ङ्गधनुष धारण किये हुए नारायण (विष्णु) भगवान प्रकट होकर भगवान श्रीकृष्ण के सामने हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करते हैं। नारायण अपनी स्तुति में भगवान श्रीकृष्ण को नवीन मेघ के समान श्याम, कामदेव के उत्पत्ति के कारण, सबका ईश्वर, वेदस्वरूप एवं सम्पूर्ण वेद वेत्ताओं के शिरोमणि बताया है। इसके साथ ही साथ श्रीकृष्ण के वाम पार्श्व से शंकर की उत्पत्ति तथा नाभि कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति दिखाई गयी है ।

ब्रह्मखण्ड के चतुर्थ अध्याय में श्रीकृष्ण के वाम पार्श्व से श्रीराधा का प्रादुर्भाव राधा के रोमकूपों से गोपांगनाओं का प्राकट्य तथा श्रीकृष्ण से गोपों, गौवों आदि की उत्पत्ति बतायी गयी है। इसी खण्ड के छठे अध्याय में नारायण आदि को पत्नी रूप में लक्ष्मी आदि देवियां प्रदान की है, तथा शंकर को दार-संयोग में अरूचि के कारण उन्हे भविष्य में शिवा से विवाह करने की आज्ञा दी।

प्रकृति खण्ड के द्वितीय अध्याय में परब्रह्म श्रीकृष्ण और राधा से देव-देवियों की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है।

॰कृष्ण शब्द में ‘कृष’ का अर्थ भक्ति और न का अर्थ दास्य है, इसलिए भक्ति और दास्य भाव के प्रदायक भगवान श्रीकृष्ण हैं। इसके साथ ही साथ ‘कृष’ समस्तवाची है और वा का अर्थ है बीज। इसलिए श्रीकृष्ण समस्त बीजस्वरूप परब्रह्म कहे गये हैं भगवान श्रीकृष्ण स्वेच्छामय एवं निराकार होते हुए भी साकार है। उन परब्रह्म परमात्मा एवं ईश्वर को योगी लोग सदा तेजोरूप निराकार कहकर उनका ध्यान करते हैं। वे अदृश्य रहते हुए भी सबको देखने वाले, सर्वज्ञाता एवं सबके पोषक हैं। परन्तु वैष्णव भक्तजन को मोर मुकुटधारी हाथ में बाँसुरी लिए श्याम पूर्ण ही अधिक आकर्षित किया है और वे इसी मनमोहिनी रूप का ही निरन्तर ध्यान भी करते है।

भगवान श्रीकृष्ण की अलौकिकता सर्वेश्वरता अनादिता आदि की व्याख्या काल-संख्या के आधार पर काल-संख्या वेत्ताओं ने इस प्रकार किया है- मनुष्यों के एक वर्ष पूरा होने पर देवों का एक दिन-रात होता है।

मनुष्यों को तीन सौ साठ युगों के व्यतीत होने पर देवों का 'एक युग' होता है। दिव्य एकहत्तर युगों का एक मन्वन्तर होता है। मन्वन्तर के समान इन्द्र की आयु होती है। इस प्रकार अट्ठाईस इन्द्र के गत होने पर ब्रह्मा का एक दिन-रात होता है। इस प्रकार के एक सौ आठ वर्ष बीत जाने पर ब्रह्मा की आयु पूरी होती है। उसे ही 'प्राकृत-प्रलय' जानना चाहिए। उस समय पृथ्वी अदृश्य रहती है और सारा विश्व जल में लीन हो जाता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिवादि देवता, ऋषिगण तथा समस्त जीवगण परात्पर भगवान श्रीकृष्ण में विलीन हो जाते है और प्रकृति भी उन्हीं में लीन होती है। इसलिए यह 'प्राकृतिक लय' कहा जाता है।'

इस प्रकार ब्रह्मा के पतन रूप उस प्राकृतिक लय के व्यतीत होने पर परमात्मा कृष्ण का एक निमेष काल (पलक भाँजना) होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण अखिल ब्रह्माण्ड का नाश हो जाता है, किन्तु गोलोक और वैकुण्ठ लोक तथा पार्षदों समेत भगवान श्रीकृष्ण पूर्ववत् विराजमान रहते हैं। उनके निमेष मात्र काल में प्रलय होता है और सारा विश्व जलमग्न हो जाता है और निमेष के अनन्तर ही क्रमशः पुनः सृष्टि का क्रम शुरू हो जाता है। इस काल निर्णय में श्रीकृष्ण की अनादिता ही सिद्ध होती है।

ब्रह्मा आदि देवता, महाविराट और क्षुद्र विराट सब परमात्मा श्रीकृष्ण के अंश है और प्रकृति भी उन्हीं का अंश है। यहीं भगवान श्रीकृष्ण दो रूपों में विभक्त होते है- एक द्विभुज और दूसरे चतुर्भुज विष्णु रूप में। चतुर्भुज वैवुâण्ठ में विराजते हैं द्विभुज स्वयं श्रीकृष्ण गोलोक में निवास करते हैं। सभी सृष्टियों का मूल कारण वही एक श्रीकृष्ण है- जो सत्य, नित्य, सनातन, परब्रह्म, निर्लिप्त, निर्गुण, प्रकृति से परे उपाधि शून्य तथा निराकार है; फिर भी भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए वे शरीर धारण करते हैं। उनके नाभिकमल से उत्पन्न होकर ज्ञानात्मा ब्रह्मा ब्रह्माण्ड की रचना करते हैं और समस्त तत्वों के वेत्ता एवं मृत्यु को जीतने वाले शिव सृष्टि का संहार करते है। इससे भी भगवान श्रीकृष्ण जगतपति सिद्ध होते है।

ब्रह्मवैवर्त के तृतीय खण्ड गणपति खण्ड में श्रीकृष्ण के स्वरूप का वर्णन नहीं हुआ है लेकिन चतुर्थ खण्ड कृष्णजन्म खण्ड में श्रीकृष्ण और राधा का चरित विस्तार से आया है।

यहाँ पर राधा और श्रीकृष्ण के अवतार लेने का कारण श्रीदामा और राधा का परस्पर शाप बताया गया है।

श्रीकृष्ण के जन्म प्रसंग प्रायः सभी पुराणों की तरह पृथ्वी का भार उतारने के लिए ही हुआ है। लेकिन जहाँ ब्रह्मवैवर्त पुराण में वसुदेव के द्वारा कृष्ण के बदले लाये यशोदा की कन्या को कंस मारने का विचार करता है तभी कंस को सम्बोधित करती हुई आकाशवाणी हुई- मूढ़ कंस! भगवान की गति को न समझकर तू किसे मार रहा है ? तुम्हारा हनन करने वाला उत्पन्न हो गया है, जो अवसर आने पर प्रकट हो जायेगा। इस प्रकार की देववाणी सुनते ही राजा ने बालिका को छोड़ दिया। यही कन्या परमात्मा कृष्ण की बड़ी बहन हुई। पार्वती के अंश से उत्पन्न वह बालिका एकानंशा नाम से विख्यात हुई, वहीं भागवत पुराण में कंस द्वारा उस कन्या का शिला पर पटका जाना तथा उसका चतुर्भुज देवी रूप दृष्टिगत होता है।

श्रीकृष्ण की बाल्यकालीन लीलाएं इस पुराण में भी रहस्य से परिपूर्ण है तथा जिसमें उनका आध्यात्मिक संदेश छिपा हुआ है। श्रीकृष्ण अपने मंगलमय आविर्भाव के बाद ही पूतना , तृणावर्त , शकटासुर , यमलार्जुन वध , वकासुर , प्रलम्बासुर , केसी , धेनुकासुर आदि को अपने हाथों से उद्धार कर (मृत्युपरान्त) गोलोकवासी बनाया है। दर्पनाश लीला द्वारा भगवान श्रीकृष्ण ने कालियनाग , ब्रह्मा तथा इन्द्र का उद्धार किया है।

गोवर्द्धनधारण लीला तथा चीरहरण लीला द्वारा श्रीकृष्ण ने लोगों को प्रकृति के महत्व से परिचित कराया है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा का स्पष्ट रूप से वर्णन हुआ है जबकि भागवत या विष्णु पुराण में राधा नाम की किसी भी गोपी का वर्णन नहीं मिलता है। राधा-कृष्ण महारास लीला में पुराणकार ने कामशास्त्र का अनुसरण किया है और इसी प्रकार का प्रेम-प्रसंग प्रायः सभी नाटककारों ने किया है।

श्रीकृष्ण मथुरा जाना (माथुरलीला) राधा-श्रीदामा का परस्पर शाप ही कारण बताया गया है। माथुर लीला से लेकर गोलोक गमन पर्यन्त लीला ब्रह्मवैवर्त के ५४वें अध्याय में संक्षेप में नारायण ने नारद से इस प्रकार बतायी है- यहाँ श्रीकृष्ण ने राजा कंस, रजक, चाणूर, मुष्टिक, कुवलयापीड तथा कुब्जा के शृङ्गारोपभोग आदि के द्वारा उद्धार किया है।

मथुरा में ही उपनयन संस्कार हुआ और वे गुरु सांदीपनि मुनि से विद्याध्ययन करने के लिए अवन्ती नगर चले गये। वहाँ से आने पर उन्होंने जरासंध को जीतकर और यवनेश्वर कालयवन को मारकर उग्रसेन

को पुनः विधिपूर्वक राजा बनाया। पश्चात् समुद्र के भीतर द्वारकापुरी की रचना करके तथा राज समूहों पर विजय प्राप्त करके रूक्मिणी देवी का अपहरण करके विवाह किया। उसी भाँति कालिन्दी, लक्ष्मणा, शैव्या, सत्या, सती जाम्बवती, मित्रविन्दा और नाग्नजिती के साथ विवाह किया। फिर भगवान ने घोर युद्ध में नरकासुर का हनन किया और उसके यहाँ राजबन्दी के रूप में अपहृत सोलह सहस्र कन्याओं से विवाह करके उनके साथ विहार किया। अनन्तर इन्द्र को सहज ही जीतकर पारिजात ले आये और चन्द्रशेखर को जीतकर बाणासुर के हाथों को काट दिया। अपने पौत्र (अनिरुद्ध) को बाणासुर की वैद से मुक्त कराकर द्वारका ले आये। पुनः वसुदेव के यज्ञ में तीर्थयात्रा के प्रसंग से आयी हुई अपनी प्राणाधिष्ठात्री देवी राधा को देखा। इस प्रकार सुदामा के शाप का सौ वर्ष पूरा होने पर राधा के साथ पुण्य वृन्दावन की पुनः यात्रा की। वहाँ पुण्य-क्षेत्र भारत में वृन्दावन के रास-मण्डल में जगत्पति भगवान श्रीकृष्ण ने राधिका के साथ चौदह वर्ष तक पुनः रासक्रीड़ा की। पूरे ग्यारह वर्षों तक नन्द के घर में रहे। इस तरह भगवान मथुरापुरी और द्वारकापुरी में कुल मिलाकर पूरे १०० वर्षों तक रहे। उस अवधि में महापराक्रमी भगवान ने पृथ्वी का भार दूर कर दिया। इस प्रकार १२५ वर्ष रहकर श्रीकृष्ण परमधाम गोलोक चले गये।

1. **ब्रह्मवैवर्त पुराण_ ब्रह्मखण्ड_ ६०_६१**

2. **ब्रह्मवैवर्त पुराण_ ब्रह्मखण्ड अध्याय_३**

3. **कृषिस्तभक्तिवचनो नश्च तद्दास्यवाचकः। भक्तिदास्यप्रदाता यः स कृष्णः परिकीर्तितः।।२५।।**

4. **कृषिश्च सर्ववचनो नकारो बीजवाचकः। सर्वबीजं। परं ब्रह्म कृष्णः इत्यभिधीयते।।२६।।**

   _ब्रह्मवैववर्त पुराण, प्रकृतिखण्ड २/२५_२६

5. **ब्रह्मवैवर्त पुराण- प्रकृति खण्ड_ २/७३-८० श्लोक**

6. **ब्रह्मवैवर्त पुराण- प्रकृति खण्ड_ २/८४-९० श्लोक**

7. **ब्रह्मवैवर्त पुराण- श्रीकृष्णजन्मखण्ड (पूर्वार्द्ध)_ ३/११६**

8. **ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय_१०**

9. **ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय_११**

10. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–१२

11. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–१४

12. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–१६

13. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–१६

14. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–१६

15. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–२२

16. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–१९

17. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–२०

18. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–२१

19. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय–५३